कोटा व्यापार महासंघ के दिवाली मिलन समारोह में माननीय अध्यक्ष का संबोधन

कोटा व्यापार महासंघ द्वारा आयोजित दिवाली मिलन समारोह में आप सब को दिवाली की बहुत-बहुत शुभकामनाएं

आप सब के जीवन व प्रतिष्ठान में समृद्धि आए, खुशहाली आए और नई प्रगति हो। आप नये आयाम और नये लक्ष्य को प्राप्त करें। आपके प्रयासों से समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन में भी उजाला हो, खुशी हो। हम सब सामूहिकता के साथ उनके जीवन में भी दिवाली की खुशी और उल्लास ला सकें।

आज कोटा के कई व्यापारिक, औद्योगिक और कोचिंग संस्थान के प्रतिनिधि यहाँ पर बैठे हुए हैं। इन सब के प्रयासों से कोटा के अलग-अलग क्षेत्रों में हमने एक विशिष्ट पहचान बनायी है। इसकी पहचान हमने देश में बनायी और देश के बाहर भी बनायी। कोटा आज देश के विकास में एक तेजी से बढ़ता हुआ शहर है, जहाँ पर बहुत संभावनाएं हैं। यहाँ विस्तार एवं इंफ्रास्ट्रक्चर की संभावनाएं हैं। कोटा में देशी-विदेशी पर्यटकों को लाने की भी संभावना है। इसलिए, जब हम सामूहिक रूप से बैठते हैं तो इसके लिए चर्चा करते हैं। चर्चा, संवाद, विचार-विमर्श, सहमति-असहमति और तर्क हमारे लोकतंत्र की ताकत है। इसी विचार-विमर्श और लोकतंत्र की 75 वर्ष की यात्रा के अंदर भारत में एक शक्तिशाली व समृद्ध राष्ट्र बनाने की हमने जो कल्पना की है, उस दिशा की ओर हम बढ़ रहे हैं।

आज जहाँ पूरे देश को गर्व है कि भारत माननीय मोदी जी के नेतृत्व में हर क्षेत्र के अंदर प्रगति कर रहा है। हमारा भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। उसके साथ-साथ विश्व के देशों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हुए, उनको साथ लेते भी, हम किस तरीके से आगे बढ़ रहे हैं। हम अपने नए इनोवेशंस, नयी सोच और नये विचार के साथ दुनिया की सबसे बड़ी ताकत बनते जा रहे हैं। आज भारत के जो लोग दुनिया के अन्य देशों में रहते हैं, उन सबको भारतीय होने का गर्व होता है। हमें भी भारतीय होने का गर्व होता है कि यहाँ इतनी बड़ी विशालता एवं इतनी विविधताएं हैं। हमारे यहाँ अलग-अलग संस्कृति, अलग-अलग भाषा और अलग-अलग धर्म हैं। शायद दुनिया का ऐसा कोई लोकतांत्रिक देश नहीं होगा, जहाँ इतनी विविधताएं हो, इतनी संस्कृति हो, इतनी भाषा हो। विशेष रूप से दुनिया के सारे धर्मों का समावेश और समानता को लेकर चलने वाला दुनिया के अंदर भारत ही एक ऐसा देश है। इस बात से हमें गर्व हैं कि हम इस विशालता, विविधता और संस्कृति को एक साथ लेकर चलते हैं। दुनिया के अंदर यह विशालता और विविधता ही हमारी ताकत है।

मैं लोक सभा के अंदर देखता हूँ कि यहाँ इतनी विविधताएं हैं। बहु-दलीय व्यवस्था होने के बाद भी जब देश का सवाल आता है तो सब लोग एक साथ मिलकर चलते हैं। हमारा देश कैसे आगे बढ़े, कैसे समृद्ध हो, इसके लिए हम एक सार्थक चर्चा भी करते हैं, एक सार्थक संवाद भी करते हैं। हर जन-प्रतिनिधि के अपने-अपने क्षेत्र का विकास हो, यह उसकी जिम्मेदारी बनती है। जनता उनको बहुत अपेक्षा और आकांक्षाओं के साथ चुनकर भेजती है। हर जन-प्रतिनिधि अपनी बात विधानसभाओं एवं लोक सभा के अंदर रखते हैं और अपने-अपने क्षेत्रों की विकास की बात करते हैं। मुझे भी आपने यहाँ से विधायक बनाया और सांसद बनाया। मुझे यहाँ की जनता का बहुत प्यार, स्नेह और आर्शीवाद मिला है। हम यहीं पैदा हुए, यही छात्र जीवन बिताए, यहीं सामाजिक व राजनीतिक जीवन बनाया। हमें यहाँ की सब समस्याओं की जानकारी है। हमारी कोशिश रहती है कि जो अभाव हैं, इंफ्रास्ट्रक्चर की जो कमी है, जिससे हम नए रोजगार का सृजन कर सकें, उसे पूरा किया जाए और हमारे कोटा का व्यापार और उद्योग एक आर्थिक ताकत के रूप में उभरें। इसके लिए सभी को सामूहिकता के साथ प्रयास करना चाहिए। मैं कह सकता हूँ कि आज इंफ्रास्ट्रक्चर की दृष्टि से कोटा एक मजबूत शहर बन चुका है। चाहे हम रोड कनेक्टिविटी की बात कर लें। रोड कनेक्टिविटी के मामले में हम यह कह सकते हैं कि देश के अंदर कोटा एक ऐसा शहर है, जो सभी शहरों से वेल कनेक्ट है। आने वाले समय में जब हमारा दिल्ली-मुम्बई कॉरिडोर पूरा हो जाएगा, तब हम साढ़े चार घंटे में दिल्ली पहुँच जाएंगे और आठ घंटे में मुम्बई पहुंच जाएंगे। हमारा जो चंबल एक्सप्रेस-वे है, जो कोटा से चलता है और मध्य प्रदेश होते हुए उतर प्रदेश के इटावा तक पहुँचता है। पहले से ही हमारी कनेक्टिविटी पोरबंदर और सिलचर तक जुड़ी हुई है। हमारी कनेक्टिविटी हर शहर से बेटर है। इसलिए, हम कह सकते हैं कि कनेक्टिविटी के रूप में कोटा एक स्थापित शहर बन चुका है। हम इस कनेक्टिविटी का लाभ कैसे व्यापार व इंडस्ट्री में ले सकते हैं, इसकी हमें कार्ययोजना बनानी है।

इसी तरीके से रेल कनेक्टिविटी है। दिल्ली-मुम्बई कॉरिडोर और रेल कनेक्टिविटी पर कोटा शहर है। आने वाले समय के अंदर कोटा का रेलवे स्टेशन, दकनिया का रेलवे स्टेशन, जिसकी हम सब ने कल्पना की थी कि यहाँ वर्ल्ड क्लास रेलवे स्टेशन होना चाहिए। 450 करोड़ रुपये की लागत से ये दो स्टेशंस भी बन जाएंगे। इसके साथ-साथ माल गोडाउन भी इंफ्रास्ट्रक्चर के रूप में है। यहाँ पर रेलगाड़ी से आवागमन होता है, इसलिए वह सस्ता पड़ता है। रोड एक्सीडेंट की संभावना भी कम होती है। इसको लेकर मुझे लगता है कि मालगाड़ी के विस्तार के लिए भी

एक व्यापक प्लान बना है। यहाँ पर किस तरीके से अधिकतम गुड्स ट्रेन चलें, जिससे वस्तुओं का आवागमन सस्ता और सुलभ हो सकें।

आपका हमेशा से माँग रहती है और विशेष रूप से कोटा के लिए एयरपोर्ट की माँग वर्षों से है। त्यागी जी ने तो खैर वर्ष 2012 में शंभूपुरा में एयरपोर्ट बना ही दिया था। मैं कई बार कहता हूँ कि एयरपोर्ट के लिए आपकी जितनी मांग है, सबकी भावनाओं को मैं समझता हूँ। आप यह मान कर चलिए कि कोटा की भावनाओं को पूरा करना मेरी नैतिक जिम्मेदारी बनती है। इसलिए, मैं कभी राजनीति की उस आरोप-प्रत्यारोप में नहीं पड़ता हूँ। जब इस एयरपोर्ट का सिलसिला शुरू हुआ तो सबसे पहले मेरे मन में बात थी कि एयरपोर्ट बनना चाहिए, क्योंकि एयरपोर्ट की जमीन राज्य सरकार देती है और एयरपोर्ट बनाने का काम भारत सरकार की एयरपोर्ट अथॉरिटी करती है। दोनों सरकारों में सामंजस्य रहे और इसके लिए दोनों सरकार सहमत है तो एयरपोर्ट बनना चाहिए। मैंने राज्य के मुख्यमंत्री से बात की। उन्होंने मुझे सकारात्मक रूप से कहा कि बिरला जी, आपके होते हुए एयरपोर्ट बन जाएगा। फिर, मैंने माननीय प्रधानमंत्री जी से बात की कि राज्य सरकार जमीन देने के लिए तैयार है। तब उन्होंने कहा कि मैं कोटा पहले भी आया था, उन्होंने यह भी कहा कि कोटा में एयरपोर्ट में बनना चाहिए। भारत सरकार की तरफ से इसका पूरा प्लान बन चुका है। उसके बाद मैंने केंद्रीय मंत्री से बात की कि आप इस एयरपोर्ट का पूरा प्लान बनाकर दे दीजिए। ज्योतिरादित्य सिंधिया जी ने पूरा प्लान बनाकर भेजा है कि किस तरीके से एयरपोर्ट बनेगा।

अब एयरपोर्ट की जो जमीन थी, वह फॉरेस्ट की थी। इस जमीन के 95 परसेंट पर फॉरेस्ट था। अब 95 परसेंट फॉरेस्ट की जमीन को क्लियरेंस कराना एक बड़ा काम था। उसके बाद जब क्लियरेंस होने लगा, तो अचानक पता चला कि इसको बफर जोन में ले लिया गया है। जब सब कुछ क्लियरेंस के नजदीक पहुँचा तो वह बफर जोन में आ गया। उस समय अधिकारियों को जानकारी नहीं थी। उन्होंने जो प्लान बनाया था, उस समय बफर जोन नहीं था। जब बफर जोन बनाया।, तो उन्होंने शंभूपुरा के एयरपोर्ट को भी बफर जोन में ले लिया।

आप जानते हैं, सब समझदार हैं कि रिजर्व फॉरेस्ट के बफर जोन से निकलना कितना मुश्किल होता है। उस बफर जोन की कार्रवाई चल रही है। मुझे लगता है कि नवंबर महीने के अंत में उसकी अंतिम औपचारिकता से स्वीकृति मिल जाएगी। उसके बाद फिर नगर विकास न्यास ने भी कुछ दिनों पहले सिद्धांत रूप से 45 करोड़ रुपये की सहमति दी है।

जब एयरपोर्ट का काम होने लगा तो पता चला कि उसमें हाईटेंशन की लाइन है। त्यागी जी, अगर बिना फॉरेस्ट के जमीन दे देते तो शायद इतना समय नहीं लगता। सरकार ने भी छांटकर वह जमीन दी, जहाँ पर 95 परसेंट फॉरेस्ट है। उन्होंने कहा कि यह केन्द्र में बैठे हैं, इसलिए क्लियर कराते रहेंगे।

आप निश्चित रूप से मानें, राज्य सरकार का भी सकारात्मक सहयोग है। यहाँ के मुख्यमंत्री जी और मंत्री जी का भी सकारात्मक सहयोग है। इसके लिए हम सभी की सकारात्मक सोच है। मुझे अच्छा लगता है कि चाहे केंद्र की सरकार हो या राज्य की सरकार हो, विकास में कोई राजनीति नहीं होनी चाहिए। आप निश्चित मानिए कि मेरा एक आईएएस अधिकारी डे-टू-डे इस एयरपोर्ट की मॉनिटरिंग करता है। कोई दिन ऐसा नहीं बचता है, जब एयरपोर्ट मामले के अंदर चर्चा नहीं होती है।

मैंने भी कई दौर की चर्चा केंद्र के मंत्री जी के साथ की। राज्य के मुख्यमंत्री से भी जब मिलता हूँ, तो इसके बारे में बात करता हूँ। अब दोनों चीजों की, राज्य सरकार ने भी सहमति दे दी है। मुझे लगता है कि सकारात्मक दिशा में काम हो रहा है और वर्ष 2023 में एयरपोर्ट की शुरुआत कर सकते हैं। मंत्री जी ने वर्ष 2022 का प्लान मुझे दिया था, लेकिन कुछ अड़चने हुईं, जिसके कारण यह नहीं हो पाया। लेकिन, आप निश्चित रहिए।

यहाँ एयरपोर्ट बनेगा और अपने कार्यकाल में ही एयरपोर्ट बनेगा। जितना समय एयरपोर्ट बनने में लगता है, उतना लगेगा। मुझे इच्छा थी कि शायद कुछ और जमीन मिल जाती तो इसको इंटरनेशनल एयरपोर्ट की संभावनाओं को अभी तैयार कर देते। आप निश्चित मानो, भविष्य के अंदर हम इस एयरपोर्ट के साथ-साथ आने वाले समय के अंदर एक आईटी पार्क के लिए हमारी योजना है। इसको हम भविष्य में अमली जामा पहनाएंगे, ताकि एयरपोर्ट के साथ-साथ विकास की नई संभावना हो सके।

एयरपोर्ट के साथ-साथ मेरे मन में दो-तीन बातें हैं, जिस पर अपने को विचार करना है। हमारे यहां जिस तरह की कनेक्टिविटी है, जिस तरीके का पानी है, जिस तरीके की बिजली है, मुझे लगता है कि हमें और संभावनाओं पर विचार करना चाहिए। कई क्षेत्र में और संभावनाएं हो सकती हैं।

पिछली बार जब मैं डिफेंस मिनिस्टर से मिला तो मैंने कहा कि कोटा में एक डिफेंस कॉरिडार की संभावना को तलाशना चाहिए। इसलिए, मैंने यहाँ पर डिफेंस एक्सपो लगाया। देश की सारी की सारी कंपनियाँ यहाँ आईं।

किस तरीके से देश की बड़ी कंपनियाँ और एमएसएमई मिलकर यहाँ पर नयी इंडस्ट्री सेक्टर को डेवलप कर सकते हैं, उसकी संभावनाओं पर विचार करने का काम चल रहा है।

उसी के साथ जनवरी महीने के अंदर, देश के जितने बड़े स्टार्टअप्स हैं, हमारे यहाँ पर अभी 17 हजार स्टार्टअप्स ने बेहतरीन काम किया है। 100 से ज्यादा यूनिकॉर्न स्टार्टअप है। उन स्टार्टअप्स को आप देखेंगे कि किस तरीके से उन्होंने देश के अंदर विश्व की चुनौतियों का समाधान करने का काम हमारे नौजवानों ने किया।

जब कभी मैं स्टार्टअप मेलों में जाता हूँ कि देखता हूँ कि उनके इनोवेशन एवं रिसर्च के माध्यम से आने वाले समय में दुनिया के अंदर भारत राज करेगा। यह काम हमारे नौजवानों के ताकत के कारण होगा। जब मैं उनका रिसर्च एवं इनोवेशन देखता हूँ तो उनके पास हर समस्या का समाधान है। जनवरी महीने में भी स्टार्टअप मेला लगाएंगे, जिसमें देश के छोटे-बड़े सभी स्टार्टअप आएंगे। उन स्टार्टअप्स को देखकर हमारे क्षेत्र का नौजवान नए स्टार्टअप के साथ छोटी इंडस्ट्री लगाने की कल्पना कर सकता है।

पिछली बार जब मैं किसान मेले के अंदर गया था, यहाँ पर किसान मेले में जाने का मेरा मकसद एक ही था कि जिस तरीके का कृषि वैज्ञानिक का काम है, जिस तरीके से नौजवानों ने स्टार्ट अप किये, मुझे लगता है कि कोटा में उसकी संभावना सबसे ज्यादा है। कोटा एक ऐसा क्षेत्र है, जो एग्रीकल्चर का सबसे बड़ा केंद्र है, जहां अधिकतम क्षेत्रों में पानी पहुंच चुका है। अभी जिन क्षेत्रों में पानी नहीं पहुंचा है, उसके लिए प्रयास चल रहा है कि हर खेत तक पानी पहुंच जाए, हर घर तक पानी पहुंच जाए। मुझे लगता है कि आने वाले समय के अंदर एग्रीकल्चर सेक्टर में बहुत बड़ी संभावना है और कई लोगों ने इस पर काम भी किया है।

अभी इसको और विस्तार करने की आवश्यकता है। जब हम नए स्टार्टअप्स को देखते हैं तो आने वाले समय के अंदर एग्रीकल्चर का एक बड़ा हब यहाँ पर तैयार कर सकते हैं। इसके लिए जो भी संभावना हो सकती है, हमें आपस में बैठ कर विचार-विमर्श करना चाहिए। मैं देखता हूँ कि कई प्रदेशों के जो नौजवान है, उनमें उद्यमिता की जो क्षमता होती है, वैसे ही हमारे नौजवानों में भी उद्यमिता की क्षमता पैदा करनी चाहिए। इसलिए, मैं उनको यहाँ ला रहा हूँ।

जब कभी भी मैं असम और कोलकाता जाता था तो कोई चुरू परिसर और पाली परिसर की बात कहता था। मैं कहता था कि क्या कोई हाड़ोती परिसर है। उन्होंने कहा कि हम हाड़ोती का कोई आदमी नहीं रखते हैं। मैंने पूछा कि हाड़ोती का आदमी क्यों नहीं रहता, वह न देश में रहता है और न ही देश के बाहर रहता है। क्योंकि, हाड़ोती में पानी होने के कारण दो टाइम की रोटी का इंतजाम था। उन सारे क्षेत्रों के अंदर ऐसी हालत थी कि दो टाइम की रोटी का इंतजाम नहीं था, उस कारण वे पलायन कर गए।

आप भी मुम्बई, कोलकाता सहित कई प्रदेशों के अंदर जाते होंगे। आपने भी देखा होगा कि उन सभी जिलों में अकाल की स्थिति होती थी। लेकिन, हमें गर्व हैं कि हमारे पास चंबल महानदी है, जिसमें पर्याप्त पानी है। इसकी संभावनाओं को देखते हुए, हम किस तरीके से एग्रीकल्चर व डेयरी सेक्टर के अंदर आगे बढ़ सकते हैं।

आप कल्पना कीजिए, जैसलमेर में चले जाएं, बाड़मेर में चले जाएं, जहाँ पानी नहीं है, वहां पर लोग डेयरी का प्लांट लगा रहे हैं। लेकिन, जहाँ पर चारागाह करने के लिए आदमी जैसलमेर, बाड़मेर, पाली से आते हैं और वहां से भेड़ चरने के लिए कोटा में आती हैं। वहाँ हम ऐसा कभी भी नहीं सोच सकते हैं। यहाँ हमें श्वेत क्रांति का केंद्र बनाना चाहिए। अभी हमारे साबू जी बैठे हैं, उन्होंने एक प्लांट लगाया है।

यहां डेयरी की बहुत संभावनाएं हैं। यहां पर जितना चारा और पानी है, उतना कई देश के अंदर नहीं है। इसके लिए हमें अलग-अलग संभावनाओं पर काम करना चाहिए। जब हम अलग-अलग संभावनाओं पर काम करेंगे तो अपने कार्यक्षेत्र के विस्तार के साथ-साथ लोगों को रोजगार दे पाएंगे।

आज हमें खुशी है कि कोटा कोचिंग का एक हब बन चुका है। राजेश जी ने ठीक कहा कि हमारी कल्पना पाँच हजार विद्यार्थियों को लाने की है। जब एक विद्यार्थी आता है तो उसके साथ एक परिवार आता है। इस प्रकार जब परिवार आता है तो उसके कारण जो उपभोक्ता है, चाहे सब्जी बेचना हो, चाहे नाई हो, चाहे धोबी हो, तमाम छोटे से छोटे ऑटो-रिक्शा वालों का भी दो टाइम की रोटी का इंतजाम होता है। इसलिए, हमारे यहां एक बहुत बड़े सेक्टर की संभावना एजुकेशन के बारे में है।

मैंने धर्मेन्द्र प्रधान जी से आग्रह किया है कि वह कोटा में आएं। मैंने उनसे कहा है कि भविष्य में जितने नए विश्वविद्यालय बनने वाले हैं, चाहे केन्द्रीय विश्वविद्यालय हो, चाहे कोई भी यूनिवर्सिटी आएगी तो उसकी संभावनाओं

पर उन्होंने सहमति दी है। अगर राज्य सरकार जमीन आवंटित करेगी तो हम एग्रीकल्चर सेक्टर का एक नया हब बना सकते हैं।

आज कोटा के अंदर आप सभी के कारण एक अच्छा वातावरण है। लोगों में प्यार और स्नेह है। हमारा शहर एक जीवंत शहर है। हमारा शहर सामूहिकता के साथ काम करने वाला शहर है। हमारी संस्कृति, हमारे संस्कार, दूसरे जगहों से आए बच्चों को परिवार की तरह पालना हो, उनको अभिभावक के रूप में प्यार देना है, यह हमारी संस्कृति है। इसलिए, देशभर से विद्यार्थी यहाँ पर आते हैं। देश के जिस हिस्से में भी मैं जाता हूँ, वहाँ लोग यह बात कहते हैं कि कोटा में एक अच्छा वातावरण है। यहाँ अच्छा वातावरण बना रहे, यह भी हमारी जिम्मेदारी है, ताकि और संभावनाओं का हम इस क्षेत्र में विस्तार कर सकें।

इसी तरीके से हम व्यापारिक लोग हैं। हम व्यापारिक लोगों को विचार करना चाहिए कि हम अपने ट्रेड के अंदर, इस प्रतिस्पर्धा वाली दुनिया के अंदर, हम जो वस्तुएं बेचते हैं, क्यों न उनकी छोटी-छोटी इंडस्ट्रीज लगाने का प्लान करें? आज क्यों नहीं हमारे मन में विचार आता है कि हम सबसे बड़ा व्यापारिक केंद्र बनें? व्यापारिक केंद्र केवल हाड़ौती में नहीं होना चाहिए। आज दो लाख बच्चे यहां पढ़ने आते हैं। उनको लगना चाहिए कि मुझे कपड़े खरीदने हैं, गहने खरीदने हैं, चप्पल पहननी है, जूते पहनने हैं, तो मैं कोटा में जाऊं, कोटा में प्रतिस्पर्धा के रूप सबसे सस्ती और सबसे अच्छी क्वालिटी की चीज मिलती है। अगर इस तरीके से व्यापारी लोग इस बात पर विचार करने लगें, तो मैं आपका सहयोग करने के लिए तैयार हूं।

दुनिया के अंदर जितनी भी अच्छी कंपनियां हैं, उन कंपनियों से बात करना, उनको यहां लाना, यह मेरी जिम्मेदारी है। केवल आपको व्यापारिक रूप से आगे बढ़ने की आवश्यकता है। हम अपने-अपने ट्रेड के अंदर विचार करें कि हमारे ट्रेड में जो संभावनाएं हैं, उनका आने वाले समय में हम क्यों उपयोग नहीं करना चाहते हैं? हम केवल व्यापारिक केंद्र क्यों बनना चाहते हैं? हम छोटी इंडस्ट्रीज के साथ व्यापारिक केंद्र भी बनें और नए इनोवेशन, नई सोच के साथ काम करें। ऐसा करने से हम बहुत बड़े काम अपने व्यापारिक उद्यम क्षेत्र में भी कर सकते हैं। ऐसी सारी संभावनाओं पर, जब हम मिलते हैं, तब बात कर सकते हैं और उसके बाद भी अलग-अलग मार्केट्स में बैठकर हमें

चर्चा करनी चाहिए, संवाद करना चाहिए कि भविष्य में हमारे लिए क्या-क्या संभावनाएं हैं? किस सेक्टर में हम इंडस्ट्रीज लगा सकते हैं। यदि आपस में विचार-विमर्श करेंगे, तो नए रोजगार के अवसरों का सृजन करेंगे।

निश्चित रूप से टूरिज्म के क्षेत्र में बड़ी संभावनाएं हैं, लेकिन टूरिज्म दो ही सेक्टर में आता है। दुनिया के अंदर जितना भी टूरिज्म है, वह दो सेक्टर की ओर बढ़ रहा है। या तो वह मुकुन्द्रा नेशनल टाइगर प्रोजेक्ट की ओर बढ़ रहा है या सफारी की ओर बढ़ रहा है। अत: ये दो हमारे सेक्टर्स हैं। मुकुन्द्रा नेशनल पार्क पर हमने कोशिश की थी, लेकिन कुछ अच्छे परिणाम नहीं आए। हम फिर से कोशिश कर रहे हैं, हम न थकते हैं, न निराश होते हैं, लगातार प्रयास करते रहते हैं। मैंने फिर कोशिश की है, जिसके एक दिन बेहतर परिणाम आएंगे और मुकुन्द्रा नेशनल पार्क को हम एक बेहतरीन नेशनल पार्क बना सकेंगे।

बूंदी भी हमारा पर्यटन का क्षेत्र है। बूंदी के अंदर और पर्यटन की भी संभावनाएं हैं। बूंदी के अंदर रेल पयर्टन पर हमने विचार किया, वहां जो किले-बावड़ियां हैं, उनके सौंदर्यीकरण पर विचार किया। केशवराय भगवान के मंदिर पर 60 करोड़ रुपए लगाए। अत: जो संभावनाएं आपके मन में आती हैं और जो संभावनाएं संभव हो सकती हैं, उनमें हम आपके साथ हैं।

देश का ऐसा कोई मंत्री नहीं है, जो जिन संभावनाओं को हम कहें, उन संभावनाओं को टाले, लेकिन हमें विचार-विमर्श करके अपने विचार देने हैं। आपका काम विचार करना और सुझाव देने का है। उन विचारों और सुझावों के आधार पर मेरी कोशिश होगी कि मैं राज्य की सरकार से और केंद्र की सरकार से बात करूंगा और उसके बेहतर और अपेक्षित परिणाम आएं, इसके लिए हम निश्चित रूप से विचार कर रहे हैं और पर्यटन के क्षेत्र के अंदर भी हम आगे बढ़ें, इसके लिए भी विचार कर रहे हैं। आने वाले समय के अंदर जितने भी सेक्टर हैं, उन सभी सेक्टर्स पर हम सबको विचार करने की आवश्यकता है।

मैं निश्चित रूप से यह कह सकता हूं कि इंडस्ट्रीज के जितने भी इलाके हैं, जिन्हें सरकार ने डेवलप करने का प्लान किया है, चाहे रामगंज मंडी की तरफ हो, चाहे लाखेरी की तरफ हो, उन सबके लिए इंडस्ट्रीज सेक्टर और इंडस्ट्री हाउसेज के साथ चर्चा कर रहे हैं। आप जानते हैं कि जो इंडस्ट्रीज लगाने वाले हैं, वे कई तरह से राज्य सरकारों के साथ नेगोसिएशन करते हैं। आजकल राज्य सरकारों में भी कई तरीके से नेगोसिएशन्स के अंदर

कॉम्पिटिशन है कि उनके यहां इंडस्ट्रीज लगें। इसलिए, जो राज्य सरकार ज्यादा रियायतें देती है, इंडस्ट्रीज वाला भी वहीं पर जाता है। इसलिए, मैंने राज्य सरकार से भी कहा है कि हमारा पैकेज ऐसा होना चाहिए। यदि हमारा पैकेज अन्य राज्यों से बेहतर होगा, तो इंडस्ट्रीज वाला अपने आप हमारे यहां आएगा।

हमारे यहां एयरपोर्ट नहीं था, उसकी संभावनाओं के लिए भी जेकेआई, डीसीएमआई, आईएलआई, सबके साथ हम संभावनाओं पर आगे आए। ऐसा नहीं है कि एयरपोर्ट्स से ही सारी इंडस्ट्रीज आती हैं। जब एयरपोर्ट्स नहीं थे, रोड कनेक्टिविटी बेटर नहीं थी, तब भी इंडस्ट्रीज लगती थीं। इसलिए हमें एक बेहतर पैकेजिंग करनी पड़ेगी। एक अच्छी पैकेजिंग के साथ उनको लगना चाहिए कि हम इंडस्ट्रीज लगाने जा रहे हैं, इसलिए इंडस्ट्रीज को संभावनाओं के साथ-साथ एक अच्छा वातावरण मिले।

मुझे आज खुशी है कि राजस्थान में ही नहीं, बल्कि पूरे देश में औद्योगिक क्षेत्र में एक अच्छा वातावरण बन चुका है। अब यूनियनों का युग समाप्त हो चुका है। हमने कई फैक्ट्रीज को यूनियनों के कारण बंद होते हुए देखा है। आज यूनियनों का युग समाप्त हो गया है। अब इंडस्ट्रीज के मालिक भी मानते हैं कि जब तक हम मजदूर को अपनी भागीदारी का हिस्सा नहीं बनाएंगे, तब तक हम इंडस्ट्रीज नहीं चला सकते।

अत: एक अच्छा समय आया है। इस समय पर जो भी आपके मन में विचार आते हैं, जो भी संभावनाएं हैं, समय-समय पर उन विचारों से मुझे अवगत कराएं। मेरी कोशिश होगी कि आपके विचारों के आधार पर हम कोटा का किस तरह विकास कर सकते हैं।

सबका मन होता है, मैं दिल्ली में हूं, लेकिन मेरा घर कोटा में है। मैं चाहे जयपुर में रहूं, चाहे दिल्ली में रहूं, लेकिन मेरा घर हमेशा कोटा ही रहेगा। अपनी धरती से प्यार हमेशा व्यक्ति को रहता है। हमें यहीं रहना है, यहीं सब कुछ करना है। सामाजिक, राजनीतिक जीवन के अंदर सब कुछ इसी शहर में करना है।

हर व्यक्ति की इच्छा रहती है कि उसका शहर, उसका संसदीय क्षेत्र देश के अंदर प्रगति करे। हम किसी से कॉम्पिटिशन नहीं करते, किसी का हक नहीं मारते, क्योंकि किसी का हक मारने की मेरी जिम्मेदारी नहीं हो सकती। मेरे लिए तो सभी 543 मेंबर्स ऑफ पार्लियामेंट समान हैं।

हममें यह प्रतिस्पर्धा होनी चाहिए कि अपने-अपने क्षेत्र में बेहतरीन काम करें, अच्छे काम करें, संवेदना के साथ काम करें। मुझे मेरे शहर पर गर्व है कि कभी भी कोई संकट, आपदा या विपत्ति आती है, तो एक जीवंत शहर की तरह आप सब लोगों की संवेदनाओं के साथ मदद करते हैं। समाज के अंदर हम जब भी गरीब और अभाव में रह रहे वंचित व्यक्तिओं को देखते हैं, तो हम मदद के लिए आगे हाथ बढ़ाते हैं।

आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद तथा दीपावली की बहुत-बहुत शुभकामनाएं।